स्नातक प्रथम खण्ड(पत्र–प्रथम)

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ, प्रकृति एवं सिद्धांत

(Social Change : Meaning, Nature & Theories of Social Change)

सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान या प्रकार (Pattern's or Kinds of Social change)

सभी समाज एवं सभी काल में सामाजिक परिवर्तन एक समान नहीं रहता है। प्रत्येक समाज में सामाजिक परिवर्तन की भिन्न भिन्न होती है। एक ही समय में एक कारक विभिन्न समाज में, सामाजिक परिवर्तन का अलग–अलग रूप देखने को मिलता है। इसलिए सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन देखने को मिलता है। मैकाइवर एवं पेज ने सामाजिक परिवर्तन के मुख्यतः तीन प्रतिमान या प्रकार का उल्लेख किया है, जो निम्न प्रकार हैः–

1. **रेखीय परिवर्तन का प्रतिमान(Pattern of Linear change)** - यह सामाजिक परिवर्तन का वह प्रतिमान है जिसमें परिवर्तन की दिशा हमेशा ऊपर की ओर ही रहता है। अर्थात परिवर्तन का विकास एक ही दिशा में होता है।
2. **उतार–चढ़ाव परिवर्तन के प्रतिमान(Pattern of Fluctuating change)** - यह सामाजिक परिवर्तन का वह प्रतिमान है जिसमें परिवर्तन की दिशा हमेशा ऊपर–नीचे करती रहती है। इस परिवर्तन में प्रगति होने पर ऊपर तथा अवनति होने पर नीचे की दिशा में होती है। अर्थात परिवर्तन एक समान नहीं होता है।
3. **चक्रीय परिवर्तन का प्रतिमान(Pattern of Cyclical change) -** यह सामाजिक परिवर्तन का वह प्रतिमान है जिसमें परिवर्तन का चक्र निरन्तर चलते रहता है। अर्थात परिवर्तन का चक्र चक्रीय होता है। इसे तरंगीय परिवर्तन भी कहा जाता है। जैसे– मानव अवस्था का चक्र, ऋतु चक्र आदि।

उपर्युक्त प्रतिमानों को चित्रों के माध्यम से भी स्पष्ट किया जा सकता है।

सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक कारक की भूमिका (Role of Political factor in Social change)

सामाजिक परिवर्तन के अनेक कारक होते हैं। एक ही राजनीतिक कारक विभिन्न राज्यों में अपनी अलग–अलग भूमिक निभाता है। सामाजिक परिवर्तन में मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, संरचनात्मक इत्यादि का प्रत्येक समाज अथवा राज्य में अलग–अलग परिवर्तन देखने को मिलता है। सामाजिक परिवर्तन का एक कारक, दूसरे कारक पर भी अपना प्रभाव डालता है तथा कारकों की प्रमुखता देश तथा काल से भी प्रभावित होती है। किसी भी देश के सामाजिक परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली कारक **राजनीतिक सत्ता** रहा है। आदिम काल में राजनीतिक सत्ता का प्रभाव देखने को नहीं के बराबर मिलता था क्योंकि उस समय विकास नगण्य के बराबर था। लेकिन आधुनिक काल में राजनीतिक सत्ता का प्रभाव काफी देखने को मिलता है। जैसे–जैसे राज्य और लोकतंत्र का विकास होने लगा, वैसे–वैसे सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में नवीन आयाम स्थापित होने लगे। विभिन्न देशों में राजनीतिक क्षेत्र में काफी विकास हुआ तथा शासन सत्ता जन आंकाक्षाओं पर चलने लगा। राजनीतिक परिवर्तन से विभिन्न प्रकार की राजनीतिक चेतना, परिवर्तनों, आन्दोलनों तथा क्रान्तियों का जन्म हुआ। आधुनिक काल में सामाजिक परिवर्तन के लिए राजनीतिक कारक को स्वीकार किया जाने लगा। विभिन्न विद्वानों का मानना है कि जैसी राजनीति व्यवस्था होगी, वैसी सामाजिक व्यवस्था बन जाती है और उसके अनुरूप सामाजिक परिवर्तन होता है। विभिन्न विद्वानों के अनुसार सामाजिक परिवर्तन के निम्न कारक हैं, इस प्रकार है : –

1. **राजनीतिक विचार** – सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक विचार अपनी अहम भूमिका निभाते हैं। कई राजनीतिक विचारकों ने अपने विचार एवं अपनी विचारधारा से देश अथवा विश्व को झकझोर दिया। मार्क्स एवं लेलिन की राजनीतिक विचारधारा से काफी परिवर्तन हुआ जिसके कारण वे युग पुरूप कहलाये। भारत में महात्मा गॉधी, दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मण्डेला, तुर्की में मुस्तफा कमाल इत्यादि ने अपने राजनीतिक विचारधारा से देश में सामाजिक परिवर्तन ला दिया। अतएव यह कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन के लिए राजनीति विचार एवं विचारधारा आवश्यक है।
2. **राजनीतिक दल** – राजनीतिक दल का भी सामाजिक परिवर्तन में बड़ा योगदान है। प्रत्येक राजनीतिक दल का गठन किसी सिद्वांत को लेकर हुआ है तथा प्रत्येक राजनीतिक दलों का अपना अलग–अलग सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियॉ होती है जिसके आधार पर अपना कार्य करते हैं। प्रत्येक राजनीतिक दल के सत्ताकाल में अलग अलग सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलता है क्योंकि सभी राजनीतिक दल अपनी–अपनी विचारधारा के अनुरूप कार्य करते हैं। किसी के कार्यकाल में अधिक

सामाजिक परिवर्तन होता है तो किसी के कार्यकाल में कम सामाजिक परविर्तन होता है। लेकिन प्रत्येक राजनीतिक दल के सत्ताकाल में कमोंवेश सामाजिक परिवर्तन होते ही है। इस प्रकार राजनीतिक दल सामाजिक परिवर्तन में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

3. **सैन्य कारक** – इतिहास गवाह है कि कई राजनीतिक घटनाओं से युद्व और क्रांति की की स्थिति उत्पन्न हुई है। युद्व और क्रांति की घटना के कारण भी सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। युद्व के कारण सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था तहस–नहस हो जाती है। युद्व के कारण कई लोग शरणार्थी बन जाते हैं और नये जगह जाकर निवास करने लगते हैं और धीरे–धीरे वहॉ की सभ्यता एवं संस्कृति में ढ़लने लगते हैं। खासकर युद्व के समय सैनिक अपनी सैन्य शक्ति का इस्तेमाल करते हैं। इसी प्रकार देश अथवा विश्व के अन्दर जब–जब क्रांति आयी है देश एवं विश्व मे सामाजिक परिवर्तन देखने को मिला है। भारत की सबसे बड़ी सामाजिक क्रांति डॉ बाबासाहेब भीमराव अम्बेदकर ने किया था जो पिछड़े, गरीब, दलितों एवं शोषितों को सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक अधिकार प्रदान किया। जिससे समाज में काफी सामाजिक परिवर्तन देखने को मिला अर्थात् सामाजिक क्रांति की घटना के कारण भी सामाजिक परिवर्तन हुआ है। इस प्रकार युद्व और सैनिक शक्ति सामाजिक परिवर्तन में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

4. **कानून** – सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में कानून का भी अपना महत्व है। प्रत्येक देश की अपनी अलग–अलग समस्या होती है और उस सामाजिक समस्या का निदान कानून के द्वारा किया जाता है। संविधान के 73 वें संशोधन के द्वारा पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीट आरक्षित करने तथा सरकारी नौकरियों में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था के कारण समाज में सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसके अलावे विभिन्न अधिनियमों यथा – विशेष विवाह अधिनियम(1954), दहेज निषेध अधिनियम(1961), हिन्दू विवाह अधिनियम(1955), अस्पृश्यता अपराध अधिनियम(1955) इत्यादि कानूनों के निर्माण से समाज में सामाजिक परिवर्तन हुए हैं।

सामाजिक परिवर्तन के परिपेक्ष्य में कानून को तीन रूपों में उल्लेख किया गया है।

(क) कानून परिवर्तन का सूचक है।

(ख) कानून सामाजिक परिवर्तन का प्रर्वतक है।

(ग) कानून सामाजिक परिवर्तन में समन्वय लाने का काम करता है।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में कानून अपनी अहम् भूमिका निभाता है।

5. **नौकरशाही** – सामान्य तौर पर नौकरशाह को लोग गलत नजरिए से देखते हैं लेकिन सामाजिक परिवर्तन में नौकरशाही अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। नौकरशाही में भी राजनीति हस्तक्षेप आवश्यक है क्योंकि जबाबदेही और जिम्मेदारी आवश्यक है क्योंकि हर समस्या का समाधान होता है केवल उसे खोजने की आवश्यकता है। व्यवहार में नौकरशाह योग्य व्यक्ति एवं अपने कार्य में दक्ष होते हैं। नौकरशाही व्यवस्था में सरकारी अधिकारी, कानून व नियमों की मर्यादा में रहकर ही अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हैं तथा उन्हें कानूनी सत्ता प्राप्त होने के कारण अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लेते हैं। यदि नौकरशाह अपने कर्त्तव्य के प्रति पाबन्द हो तथा समाज में बिना भेदभाव किए समस्त कार्यो का क्रियान्वयन करता है तो निश्चित रूप से सामाजिक परिवर्तन देखने को मिलेगा। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में नौकरशाही की भूमिका महत्वपूर्ण है।

क्रम जारी.....